IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर की शिक्षा गुणवत्ता बढ़ाने में नई शिक्षा नीति द्वारा निर्धारित पाठ्यक्रम का अध्ययन

Dr. Kabita Tiwari

शोध सारांश

किसी भी शब्द के चतुर्दिक विकास हेतु आवश्यक वैज्ञानिक, सामाजिक एवं मानवीय क्षमता प्रदान करने वाले विद्यार्थी राष्ट्र की अमूल्य धरोहर है। आता विद्यार्थियों का समुचित विकाल प्रत्येक राष्ट्र के लिए अपरिहार्य है। सम्यक विकास समन्वित व्यवहार तथा प्रभावी अधिगम हेतु विद्यार्थियों का समग्र रूप से स्वरूप होना अत्यंत आवश्यक है। जिससे वह राष्ट्र को उन्नति में सहयोग करते हुए शक्ति संपन्न समर्थ, दक्ष और सार्थक नागरिक सिद्ध हो सके। मानसिक स्वास्थ्य का अभाव विभिन्न समस्याओं का जनक है। स्वास्थ का अभाव विभिन्न समस्याओं जनक है। संसार के सभी मनुष्य मुख में एवं शांतिपूर्ण जीवन जीने की कामना करते हैं। संतुष्ट तथा सुख में जीवन का आधार सुस्वास्थ्य है। जो व्यक्ति को अर्थपूर्ण एवं सक्रिय जीवन जीने हेतु प्रेरित करता है। स्वस्थ मानव का परमावश्यक गुण है। जिसे उसे मिट्टी के समान स्वीकार किया गया है। जिससे सर्वोत्तम सुमन पुष्पित होते हैं।

प्रस्तावना

तंदुरुस्ती हजार नियामत है। यह शक्ति भी शारीरिक पक्ष की महत्ता स्थापित करती है। इसके साथ ही साथिया उल्लेख किया गया है की मां के स्वास्थ होने पर ही शरीर की स्वास्थता संभवहै। इस प्रकार मानसिक स्वास्थ्य का विशेष महत्व है। मानसिक स्वास्थ्य सम्प्रत्यय के स्वरूप के संबंध में विभिन्न मनोवैज्ञानिकों, मनोचिकित्सको एवं विद्वानों ने भिन्न-भिन्न विचार प्रस्तुत किया है:-

कट्स और मीस्ले (1941) ने लिखा है कि मानसिक स्वास्थ्य व योग्यता है। जिससे हम जीवन की कठिन परिस्थितियों से अपना सामंजस्य स्थापित करते हैं और मानसिक आरोग्य व साधन है। हु इस समुद्र से को संभव बनाता है

मानसिक स्वास्थ्य

मनोविज्ञान की जड़ें दर्शनशास्त्र में है। किंतु पाश्चात्य मनोवैज्ञानिकों ने आत्मा और मन को संज्ञात्मक प्रक्रियाओं के द्वारा अपदस्त कर दिया है। भारतीय दर्शन और मनोविज्ञान अभी भी आत्मा चेतना और मन को मानव व्यवहार का महत्वपूर्ण आधार समझता और मानता है।

शरीर, मन और आत्मा तीनों ही एक दूसरे से धनिष्ट रूप से सम्बन्धित है। यही करण है कि भारतीय मनोविज्ञान में एकऔर तो "शरीर माध्यम कुल धर्म साधन कहां जाता है"! तो दूसरी और सब कुछ आत्मा के आश्रित रूप में प्रतिपादित किया गया है।

आत्म दर्शन हेतु इसे प्रोत्साहित किया जाता है। आता मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को परस्पर आश्रित समझ गया है।

मानसिक स्वास्थ्य इस बात पर भी निर्भर करता है कि हमारे विचार सकारात्मक है या नकारात्मक यदि मानव मन नकारात्मक संवेगों जैसे क्रोध, हरजा, ईर्ष्या, भय आदि से नियंत्रित है। तो इनका प्रभाव मनुष्य के मनुष्य के मानसिक स्वास्थ्य और शारीरिक स्वास्थ्य दोनों पर प्रभाव पड़ेगा।

अध्ययन का औचित्य

मानसिक स्वास्थ्य एवं शैक्षिक उपलब्धि का परस्पर गहन संबंध है क्योंकि मानसिक स्वास्थ्य विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है। मानसिक स्वास्थ्य के द्वारा विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि किस तरह प्रभावित होती है। यह जानना है कि इस लघु शोध का विषय है। मानसिक स्वास्थ्य किसी न किसी रूप में विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है। तू विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य में सुधार हेतु उपयुक्त सुझाव दिए जा सकते हैं। यह जानने हेतु ही इस लघु शोध अध्ययन की अनुसंधान कार्य ने अपने शोध के लिए इस समस्या का चयन किया है।

समस्या में प्रयुक्त प्रत्ययों की व्याख्या

मानसिक स्वास्थ्य :-मानसिक स्वास्थ्य तात्पर्य व्यक्ति द्वारा अपनी भावनाओं, इच्छाओं, महत्वाकांक्षाओ और आदर्शों को वास्तविक धरातल तक सीमित रखना और अपने आप को अपने पर्यावरण के अनुसार डालने और उसके साथ समायोजन करने अथवा अपने पर्यावरण को अपने अनुकूल ढालने और उसके समायोजन करने की योग्यता है।

शैक्षिक उपलब्धि - शैक्षिक उपलब्धि से हमारा तात्पर्य है। शिक्षण उद्देश्य की प्राप्ति हेतु विद्यार्थियों ने शिक्षा से संबंधित शैक्षिक उद्देश्यों को किस सीमा तक प्राप्त कर लिया है। यही उनकी शैक्षिक उपलब्धि को बताता है। प्रस्तुत लघु शोध अध्ययन में शैक्षिक उपलब्धि के लिए विद्यार्थियों के कक्षा दसवीं के प्राप्तांक को लिया गया है।

उच्च माध्यमिक स्तर - उच्च माध्यमिक स्तर से तात्पर्य प्राथमिक एवं उच्च स्तर (शिखा के मध्य स्थित होने से है। इसके अंतर्गत 9 वी कक्षा से 12 वीं कक्षा के विद्यार्थी समाविष्ट होते हैं। प्रस्तुत अध्ययन में 11वीं कक्षा के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया गया है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य

- उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य और इसके 6 क्षेत्रों का तुलनात्मक अध्ययन
- उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करना

शोध परिकल्पनाएं

- उच्च माध्यमिक स्तर पर बालक एवं बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य प्राप्तांको में सार्थक अंतर नहीं है।
- उच्च माध्यमिक स्तर पर बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त अंकों में सार्थक अंतर नहीं है।

अध्ययन का परिसीमांकन - प्रस्तुत लघु शोध कार्य के निम्न परिसीमाएं हैं;-

प्रस्तुत लघु शोध कार्य में केवल मोदीनगर में स्थित उच्च माध्यमिक स्तर पर अध्यनरत 11वीं कक्षा के 100 विद्यार्थियों को ही सम्मिलित किया गया है।

अध्ययन में प्रयुक्त विधि - प्रस्तुत शोध में शोध तीन सर्वेक्षण विधि का चयन किया है।

जनसंख्या - प्रस्तुत अध्ययन में गाजियाबाद जिले के मोदीनगर तहसील के बालक एवं बालिकाओं के दो विद्यालय का चयन किया है।

न्यादर्श- प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्ता ने प्रदतों संकलन करने के लिए मोदीनगर के बालक एवं बालिकाओं की दो विद्यालय का चयन किया गया है। न्यादर्श में एक विद्यालय से 50 बालक तथा दूसरे विद्यालय में 50 बालिकाओं का चयन किया गया है।

शोध के उपकरण - प्रस्तुत अध्ययन हेतु निम्न परीक्षण पत्र का प्रयोग किया जायेगा मानसिक स्वास्थ्य मापनी (अरुण कुमार सिंह पटना) (अल्पणा सेन गुप्ता ,पटना) इन उपकरण का प्रयोग मानसिक स्वास्थ्य मापन के लिए किया गया है।

अध्ययन के परिणाम - प्रस्तुत शोध की प्रक्रिया के दौरान प्रदत्तों के संकलन प्रदतों के विश्लेषण तथा परिकल्पनाओं के सत्यापन एवं परिणामों की व्याख्या के पश्चात शोधकर्ता निम्नलिखित निष्कर्ष पर पहुंचा है।

1. उच्च माध्यमिक स्तर पर बालक एवं बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य प्राप्तांको में समानता का अभाव है।

2. उच्च माध्यमिक स्तर पर बालक एवं बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि प्राप्तांको में समानता का अभाव है।

निष्कर्ष :-

बालक एवं बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य के आयामों जैसे अपना सकारात्मक विकाल वास्तविकता का ज्ञान, व्यक्तित्व समाकलन, स्वायत्ता शालन, समूहवाचक अभिवृत्ति और वातावरण का पूर्ण ज्ञान के मध्य सार्थक अंतर नहीं है क्योंकि आज समाज में मानसिक स्वास्थ्य का अर्ध व वास्तविकता के धरातल पर वातावरण से सब पर्याप्त सामंजस्य करने की योग्यता ही नहीं है बल्कि दैनिक जीवन में भावनाओं, इच्छाओं, आदर्श और महत्वाकांक्षाओं में संतुलन रखने की योग्यता सेहै। जिसका तात्पर्य अपने जीवन की वास्तविकता का सामना करने और उनका शिकार करने की योग्यता से होता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1.मंगल डॉ.एस के(1991) शुभ्रा प्रारंभिक स्तर पर शारीरिक एवं स्वास्थ्य शिक्षा, आर्य बुक डिपो 30 करोल बाग नई दिल्ली ।

2. पांडे कल्पलता (2016) श्रीवास्तव एस एस शिक्षा मनोविज्ञान
3. भटनागर ए बी शैक्षिक मनोविज्ञान, इंटरनेशनल पब्लिशिंग हाउस मेरठ।
4. लाल रमन बिहारी जोशी शिक्षा मनोविज्ञान एवं प्रारंभिक सांख्यिकी अधिगमकर्ता का विकास एवं शिक्षण अधिगम प्रक्रिया आर लाल बुक डिपो मेरठ।
5. श्रीवास्तव डॉ ए के (2016) शारीरिक शिक्षा एवं मानसिक शिक्षा, दिल्ली इंजीनियरिंग कॉलेज बवाना रोड, दिल्ली प्रेरणा प्रकाशन प्रथम संस्कृत
6. डॉ एमके 2017 स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा, विनोद पुस्तक मंदिर आगरा 2संस्करण
7. धानी योगिराज 2018 शारीरिक शिक्षा और स्वास्थ्य संबंधित शिक्षा प्ररेणा प्रकाशन दिल्ली।
8. आधार विपिन वास श्वेता मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन सेट जोजफ कॉलेज आगरा।
9. शर्मा डॉक्टर बिल सक्सैना डॉक्टर आर एन यू. जी.सी. नेट शिक्षा शास्त्र आर लाल बुक डिपो मेरठ